[This question paper contains 2 printed pages.]

(6) **Your Roll No.**...2022-23

Sr. No. of Question Paper : 4035 **C**

Unique Paper Code : 12051501

Name of the Paper : Pashchatya Kavyashastra

Name of the Course : **HINDI (Hons.)**

Semester : V

समय : 3 घण्टे **पूर्णांक : 75**

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. अरस्तू के अनुकरण सिद्धांत का विवेचन कीजिए। (12)

अथवा

लोंजाइनस के उदात्त सिद्धांत को स्पष्ट कीजिए।

2. कॉलरिज के काव्यभाषा संबंधी मान्यताओं का परिचय दीजिए। (12)

P.T.O.

अथवा

टी.एस.इलियट की परंपरा और वैयक्तिक प्रज्ञा संबंधी अवधारणा को स्पष्ट करें।

3. स्वच्छंदतावाद की अवधारणा पर प्रकाश डालें। (12)

अथवा

मार्क्सवादी आलोचना का सामान्य परिचय दीजिए।

4. बिम्ब को स्पष्ट करते हुए काव्य में उसकी उपयोगिता पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

विसंगति और विडंबना की अवधारणा को उदाहरण सहित स्पष्ट करें।

5. **किन्हीं तीन** पर टिप्पणी लिखिए - (9,9,9)

(क) त्रासदी

(ख) कॉलरीज का कल्पना सिद्धांत

(ग) फैन्टेसी

(घ) उत्तर संरचनावाद

(ङ) प्रतीक

(5000)

[This question paper contains 4 printed pages.]

(7) Your Roll No. 2022-23

Sr. No. of Question Paper : 4138 **C**

Unique Paper Code : 12057503

Name of the Paper : अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi, CBCS, DSE-I**

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

Deshbandhu College Library, Kalkaji, New Delhi

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. भारतीय संदर्भ में स्त्री मुक्ति आंदोलन पर प्रकाश डालिए।

अथवा

आदिवासी विमर्श की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए उनके आंदोलनों के विभिन्न कारणों को रेखांकित कीजिए। (15)

2. किन्हीं तीन अंशों की व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) लोहा काला होता है, इस वास्ते लोहे का यह जमाना कलूकाल

P.T.O.

है। फिरंगियों के जादूचाला से तुम्हारी मति इस भेद को पल्ले नहीं पालती कि उनके लिए लोहा ताकत है और तुम्हारे लिए 'कालाकाल' तुम समझो और भेद पाओ कि कलूकाल तुम्हारे लिए अंधेरा है। मैं तुम्हें अक्ल की विद्या सिखा कर जादूगरों के फैलाये अंधेरे से उबारने के वास्ते धरती पर परगट हुआ हूँ। इसके बाहर मेरा कोई मंसूबा नहीं है। तुम सब मुझ साध सैंगाजी की सीख पर नहीं चलोगे तो गारत में जाओगे।

अथवा

एक तरफ संबंध मोहब्बत की पुख्ता जमीन पर खड़ा हो रहा है, तो दूसरी ओर आत्म-सम्मान, तर्क की छेनी-हथौड़ी से संवेदना पर प्रहार कर उसे व्यथा के समंदर में धकेल रहा है। दिल कह रहा है कि आज की खूबसूरती जी लो, प्यार को दोनों हाथों की अंजुली में भरकर पी लो, न ज़ुबैर को निराश करो, न खुद को दुःखी, मगर चेतना उसे रोक रही है-भावना में मत बहो, ऐसी हज़ार हसीन रातें आएंगी, ज़रा इंतजार करो। आज के सुख के लिए कल का समझौता बहुत महंगा पड़ेगा, जहाँ दर्द के गलियारों में भटकन होगी। एबादत का सूरज बीच में ही डूब जाएगा। सारी रातें सियाह पड़ जाएँगी।

(ख) काली छाया-सी डोलती
सात भाइयों के बीच
चम्पा सयानी हुई।
ओखल में धान के साथ

कूट दी गई
भूसी के साथ कूड़े पर
फेंक दी गई।
वहां अमरबेल बन उगी।
झरबेरी के साथ. कंटीली झाड़ों के बीच
चंपा अमरबेल बन सयानी हुई
फिर से घर आ धमकी।

अथवा

मारे थानेदरवा बोलाइ घरवा से हमें,
झूठइ बनावें गुनहगार।
जेलवा में मलवा उठावै मजबूर करें,
केउ नहिं सुनत गोहार।
देसवा अजाद अहै हम तो गुलमवां,
हमरे लिये न सरकार।
ऐसन कौनउ जुगुति लगावा भइया 'मितई'
हमरउ करावा उरधार।

(ग) इस्तीफे के बाद डॉ अंबेडकर ने कहा था कि जो योगदान वे भारतीय संविधान लिखकर नहीं कर पाए थे, उसे वे हिंदू कोड बिल के माध्यम से पूरा करना चाहते थे। इन तमाम जानकारियों के बाद स्वामी करपात्री जी के प्रति सातवें दर्जे में पढ़ते हुए जो अगाध श्रद्धा जागी थी, वह यकायक चकनाचूर हो गई। स्वामी करपात्री जी के बाद 'जनसंघ' पार्टी के उम्मीदवार ने,

जो रानीपुर इंटर कॉलेज के प्रिंसिपल थे, हमारे स्कूल में एक सभा की। वे बार-बार राणा प्रताप तथा रानी लक्ष्मीबाई का गुणगान करते हुए भाषण देने लगे। हमें उनकी बातें बड़ी उबाऊ सी लगती थीं।

अथवा

स्त्री के जीवन की अनेक विवशताओं में प्रधान और कदाचित उसे सबसे अधिक जड़ बनाने वाली अर्थ से संबंध रखती है और रखती रहेगी, क्योंकि वह सामाजिक प्राणी की अनिवार्य आवश्यकता है। अर्थ का प्रश्न केवल उसी के जीवन से संबंध रखता है, यह धारणा भ्रान्ति-मूलक है। जहाँ तक सामाज़िक प्राणी का संबंध है, स्त्री उतनी ही अधिक अधिकार-सम्पन्न है, जितना पुरुष; चाहे वह अपने अधिकारों का उपयोग करे या न करे। समाज न उनके उपयोग का मूल्य घटा सकता है और न बढ़ा सकता है, परन्तु उन बंधनों में कुछ ऐसे भी हो सकते हैं, जो केवल उसके लिए ही नहीं, वरन सबके लिए घातक सिद्ध होंगे।

3. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखी : (10×3=30)

(क) 'सलाम' कहानी में दलित चेतना

(ख) लिंगभेद

(ग) आदिवासी और पहचान का सवाल

(घ) क्रांतिवीर मदारी पासी-अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष

(ङ) निर्मला पुतुल की कविता का स्वर

(च) अन्या से अनन्या तक में नारी चेतना का स्वर

(3000)

[This question paper contains 4 printed pages.]

(8) Your Roll No. 2022-23

Sr. No. of Question Paper : 4278 **C**

Unique Paper Code : 12057503

Name of the Paper : अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi, CBCS, DSE-1**

Semester : V

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 75

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. आदिवासी विमर्श की पहचान और अवधारणा पर प्रकाश डालिए । (15)

अथवा

दलित स्त्रीवाद के प्रमुख सरोकारों की विवेचना कीजिए ।

P.T.O.

2. किन्हीं तीन अंशों की व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) चायवाला उसके ठीक सामने तनकर खड़ा हो गया। दोनों हाथ कूल्हों पर टिकाकर सीना चौड़ा करते हुए बोला, "यो पैसे सहर में जाके दिखाणा। दो पैसे हो गए जेब में तो सारी दुनिया को सिर पे ठाये घूमो... ये सहर नहीं गाँव है... यहां चूहड़े-चमारों को मेरी दुकान में तो चाय ना मिलती... कहीं और जाके पियो।"

अथवा

कल शाम मोलवी इमाम आये थे। कहने लगे कि मेहर जितना ज्यादा बंधवा लो, उससे क्या फायदा ! लड़के वाले शान में आकर राजी हो जाते हैं, क्योंकि उन्हें देना तो एक छदाम नहीं है। दिल को बहलाना है, जितने का बंधवा लो, वरना इस्लाम के मुताबिक तो निकाह के फौरन बाद मेहर की रकम की अदायगी का हुक्म है, मगर यहां सुनता कौन है! सब नए-नए कानून अपनी सहूलियत की वजह से बना रहे हैं। नाम इस्लाम का ले रहे हैं, मगर मैं सोचती हूं, चाहे पहले या चाहे बाद में देने वाले तो देते हैं।

(ख) हमनी के इनरा के निगिचे न जाइलेजा
पांके में से भरि-भरि पिअतानी पानी।
पनहीं से पिटि-पिटी हाथ गोड़ तुरि दैलें,
हमनी के एतनी काही के हलकानी।।

अथवा

इतना सुनना था कि अधर में त्रटकती हुई
एक अदृश्य टहनी से
टिड्डियां उड़ीं और रंगीन अफवाहें
चीखती हुई चीं-चीं
'दुश्चरित्र महिलाएं, दुश्चरित्र महिलाएं
किन्हीं सरपरस्तों के दम पर फूली फैलीं
अगरधत्त जंगल बताएं!
खाती - पीती सुख से ऊबी
और बेकार बेचैन, आवारा महिलाओं का ही
शगल हैं ये कहानियां और कविताएं।
फिर, ये उन्होंने थोड़े ही लिखी हैं।'
(कनखियां इशारे, फिर कनखी)
बाकी कहानी बस कनखी है।
है परमपिताओं,
परमपुरुषों-
बख्शो, बख्शो, अब हमें बख्शो !

(ग) वह भादों की उमस भरी दुपहरिया और चुपचाप बैठे रहना। सारा अस्तित्व हिचकोले खा रहा था। अम्मा मेरा अपराध क्या है? क्या महीने-के-महीने टाँगों के बीच रिसता हुआ खून मुझे अच्छा लगता है? और इसके कारण कैसी अजीब-सी आत्मग्लानि, अपराधबोध से मन खारा क्यों हो जाता है? गीता को तो अभी तक कुछ नहीं हुआ। फिर मुझे ही क्यों? पाँच बजे शाम को दाई मां ने बरामदे का दरवाजा खोला। अम्मा ने धीरे से हिदायत

दी, "सब पूर-पल्ला धोकर फेंकना, किसी की नजर नहीं पड़े।" गीता, किशन, पुष्पा और छोटे भैया मोनोपली खेल रहे थे। किशन ने मुझे देखते ही चिढ़ाया, "हे... है... अछूत कन्या.. अछूत कन्या !" शर्म से सारा शरीर झुक गया। तो इन लोगों को भी मालूम था ! छत पर फिर एक करमकांड। खून से सने कपड़े को धोना।

अथवा

कोई नियम, कोई आदर्श सब काल और सब परिस्थितियों के लिए नहीं बनाया जाता; सब में समय के अनुसार परिवर्तन संभव ही नहीं, अनिवार्य हो जाते हैं। प्राचीन आधार-शिला को बिना हटाये हुए हम उस पर वर्तमान का निर्माण करके अपने जीवन के मार्ग को प्रशस्त करते रह सकते हैं, अन्यथा कोई प्रगति संभव ही नहीं रहती। समाज ने स्त्री के संबंध में अर्थ का ऐसा विषय विभाजन किया है कि साधारण श्रमजीवी वर्ग से लेकर संपन्न वर्ग की स्त्रियों तक की स्थिति दयनीय ही कही जाने योग्य है।

3. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए : (10×3=30)

(क) दलित साहित्य की चेतना के निर्माण में डॉक्टर आंबेडकर के विचारों का योगदान।

(ख) पश्चिमी स्त्रीवादी आंदोलन का विकास।

(ग) 'सलाम' कहानी में अभिव्यक्त सामाजिक समस्याएं।